''जैन दर्शन से विश्व समस्याओं का समाधान संभव''

– आचार्यश्री महाप्रज्ञ

लाडनूं, 10 मई।

''जैन धर्म एक महत्त्वपूर्ण धर्म है, महत्त्वपूर्ण दर्शन है। इसके द्वारा विश्व की समस्याओं का समाधान हो सकता है। किन्तु जैन धर्म हिन्दुस्तान की सीमा तक ही रहा। इसको व्यापक रूप देने का श्रेय आचार्य तुलसी को है। जिन्होंने समण श्रेणी की स्थापना की। इस श्रेणी ने विदेश में जैन धर्म को वैज्ञानिक शैली में प्रस्तुत किया है। जिससे वहां की युवा पीढी में नई जिज्ञासा पैदा हुई है। वहां के लोग यह मानने लगे हैं कि इतने अच्छे धर्म के विषय में पहले क्यों नहीं बताया गया।''

उक्त विचार आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में उपस्थित जनमेदनी को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि कोई भी धर्म अपनी बात को जनता तक न पहुंचा सके। तब तक उसका मूल्यांकन नहीं हो सकता। रसिया, सोवियत संघ के देशों में पचास से अधिक सेंटर प्रेक्षाध्यान के चल रहे हैं और काफी रसियन उसमें भाग ले रहे हैं। इस बात की अपेक्षा है कि जो एक अमूल्य धरोहर हमारे पास है, जो विरासत में हमें मिला है वह बहुत मूल्यवान है उसे जनता तक पहुंचाएं जिससे दूसरे लोग भी लाभान्वित हो सकें।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि महावीर की वाणी जो एक बहुत शक्तिशाली वाणी है जिनमें बहुत समाधान है और जो सब जाति, संप्रदाय आदि से परे एक शुद्ध अध्यात्मिक चेतना को जगाने वाली वाणी है। कैसे विश्व मानस तक पहुंचे इस विषय पर ध्यान देना जरूरी है।

उन्होंने यह भी कहा कि जैन विश्व भारती का और विश्वविद्यालय का एक महत्त्व इसलिए है कि इसके माध्यम से जैन आगम, साहित्य, विचार और प्रयोग विश्व के अंचल तक पहुंच रहे हैं। उन्होंने कहा कि आज आवश्यकता है व्यक्ति स्वयं प्रशिक्षित बने। हमारा विश्वास केवल प्रवचन में ही नहीं है। प्रवचन के साथ प्रयोगिक प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रेक्षाध्यान के प्रायोगिक प्रशिक्षण से व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान कर सकते हैं और अपनी आदतों स्वभाव में परिवर्तन कर सकते हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि जब तक अध्यात्म को नहीं पढेंगे तब तक जीवन अधूरा रह जाएगा। जीवन केवल धन कमाने, भोग करने, सुख सुविधा में रहने के लिए नहीं है। जीवन का एक उद्देश्य होना चाहिए कि मैं चेतना का उध्वारोहण, चेतना का विकास करूं और अपनी विशुद्ध चेतना के द्वारा किस प्रकार एक अपूर्व आनन्द का अनुभव कर सकूं।

युवाचार्यश्री महाश्रमण ने प्रज्ञापना सूत्र पर प्रवचन दिया।

साध्वी जीनप्रभाजी ने तत्वज्ञान की परीक्षाओं के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए तत्वज्ञान से जुड़ने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

अमेरिका यात्रा से लोटी आचार्य महाप्रज्ञ की शिष्या

आचार्य महाप्रज्ञ की शिष्या मुमुक्षु निकिता अपनी नौ महीने की अमेरिका यात्रा संपन्न कर जैन विश्व भारती पहुंची। मुमुक्षु निकिता ने अपनी यात्रा की जानकारी देते हुए बताया कि मियामी विश्वविद्यालय में समणी समणी चारित्रप्रज्ञा एवं समणी उन्नतप्रज्ञा के साथ जैन दर्शन को वहां के छात्रों को समझाने का अवसर मिला। उल्लेखनीय है कि समणी चरित्रप्रज्ञा वहां पर पीछले तीन वर्षों से विजिटिंग प्रोफेसर के तौर पर नियुक्त है। जिससे वहां के छात्रों में जैन दर्शन के प्रति नई जिज्ञासा पैदा हुई है।

रसियन बालक ने सुनाये प्राकृत के श्लोक

पीछले दो महिनों से आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में रह रहे रसिया के 11 वर्षिय बालक मार्क ने आज कार्यक्रम में प्राकृत के श्लोक की प्रस्तुति देकर वाह वाही लूटी। उसके द्वारा हिन्दी में रचित भावभीनी गीत एवं प्राकृत के लोग्गस पाठ को सुनकर सब आश्चर्य चकित हो गये। मार्क अपने माता–पिता के साथ मुनि चर्या को जानने के साथ हिन्दी एवं प्राकृत के श्लोकों को कंठस्थ करने में लगा है। उसका मानस जैन मुनि बनने का है।